CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF 2021 - 6.169

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 25th Jan. 2022, Revised on 24th Feb. 2022, Accepted 18th Mar. 2022

शोध–आलेख

11 वीं कक्षा के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बंध एवं समायोजन का अध्ययन

* राजेश कुमार, *शोधार्थी*
ग्राम–भीटेड़ा, पोस्ट–रिवाली, तहसील–बहरोड़
जिला–अलवर, राजस्थान
E-Mail- rajeshkm728@gmail.com, Mob- 9785606479

मुख्य शब्द– *आधुनिकीकरण, व्यवसाय, समायोजन, नैतिकता, प्रजातान्त्रिक, परिस्थिति, विश्लेषण आदि।*

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य 11 वीं कक्षा के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बंध व समाायोजन का अध्ययन करना है। इस शोध के लिए विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया तथा आकड़ो के विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, टी–परीक्षण तथा सहसम्बंध का प्रयोग करके परिणामों की व्याख्या की गई है। शोध निष्कर्षो में 11 वीं कक्षा स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बंध एवं समायोजन के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया तथा दोनों चरों में धनात्मक सह–सम्बंध भी पाया गया ।

वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा जगत में यह समस्या अत्यंत महत्वपूर्ण एवं ज्वलंत है। आज के युग में जीवन पूरी तहर से आधुनिकीकरण से प्रभावित है। तथा इसी आधुनिकीकरण एवं दिखावे तथा प्रतियोगिता की होड़ में अभिभावक अधिक से अधिक भौतिक साधनों को जुटाने में लगे हुये है। उच्च शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश दिलाने के लिए अपने कैरियर तथा व्यवसाय में उन्नति के लिए अधिक वयस्त हो गये है। कि अपनी वयस्तता के कारण वे अपने बच्चों को समय नही दे पाते । इस कारण बच्चे का कोमल मन बहुत अधिक प्रभावित होता है। और नैतिक मूल्यों को नही सीख पाता है। अतः समाज परिवार एवं विद्यालय के कारण बच्चों में अनुशासनहीनता तथा हिंसात्मक प्रवृति बढ रही है। अतः इस अध्यन में 11 वीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन व उनके पारिवारिक सम्बन्धों को जाना गया है।

प्रस्तावना

परिवार समाज की मूल इकाई है। यह व्यक्तित्व के समाजीकरण की पीढ़ी हैं बालक के विकास में परिवार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। सर्वप्रथम घर से ही बालक समाज के साथ जुड़ता है। मनुष्य घर में जितना अधिक स्नेह,शालीनता, आदि सदगुणों के साथ व्यवहार करता है। उसके अनुरूप ही वह दूसरों को आत्मीयता, स्नेह, सहयोग, और सच्ची सहानुभूति नैतिकता प्रदान करता है। पारिवारिक सुख के यथार्थ आधार यही है।

आज समाज में अनेक सामाजिक परिवतन हो रहे है। इन परिवर्तनों का प्रमुख प्रभाव पारिवारिक सम्बंधों पर पड़ा है। विश्व के प्रायः सभी परिवारों में प्रजातान्त्रिक आदर्श मिलते रहते है। इन प्रजान्तान्त्रिक आदशौ के कारण ही परिवार का हर सदस्य अपने कर्तव्य का पालन करता है। और परिवार के हित के लिए कार्य करता है। सामाजिक परिवर्तन के अनेक कारकों ने आज माता–पिता, भाई, बहन, पति–पत्नी के सम्बंधों को परिवर्तित किया है। व्यक्ति द्वारा सन्तान के प्रति अभिव्यक्ति प्रेम विभिन्न रूप एवं मात्रा में पाया जाता है। सभी माता–पिता अपनी संतान के प्रति एक ही मात्रा में अपना प्यार प्रदर्शित नही करते है। कुछ परिवारों में बालकों के प्रति माता–पिता में अगाध प्रेम होता है। किन्तु कुछ अन्य परिवारों में अधिक संतान, कम आय, शैक्षिक पिछड़ापन इत्यादि कारणों से बालक को परिवार से उचित प्रेम का वातावरण नही मिल पाता इसके अलावा पारिवारिक वातावरण में अनेक ऐसे तत्व होते है जो परिवार के वातावरण को दूषित तथा अस्वस्थ बना देते है। जैसे धरेलू लड़ाई–झगड़े, निर्धनता, माता–पिता का पक्षपात पूर्ण रवैया, परिवार में अधिक बालकों का होना आदि। इनका प्रभाव विकसित हो रहे बालको पर पड़ता है।

समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्राणी को अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखना है। समायोजन की प्रक्रिया का विश्लेषण करने के लिए हमें व्यक्ति के विकास का लम्बवत अध्ययन करना चाहिए। बालक जन्म के समय अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को नियन्त्रण करना सीख लेता है। उसका समायोजन अब मुख्य रूप से बाह्य वातावरण जिसमें वह रहता है पर निर्भर करेगा।

समायोजन करने वाले व्यक्ति में प्रायः परिस्थिति का ज्ञान, नियंत्रण तथा अनुकूल आचरण, संतुलन, पर्यावरण तथा परिस्थिति से लाभ उठाना, समाज के अन्य व्यक्तिव्यों का ध्यान रखना, सन्तुष्टि एवं सुख, सामाजिकता, आदर्श चरित्र, संवेगात्मक रूप से अस्थि, संतुलन तथा दायित्वपूर्ण, साहस एवं समस्या का समाधान युक्त लक्षण पाये जाते है।

समायोजित व्यक्ति में सामाजिकता की भावना होती है, उसके उद्देश्य स्पष्ट होते है तथा साहस पूर्ण व उचित ढंग से कठिनाईयों व समस्याओं का सामना करता है अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह समाज के अन्य लोगों को कष्ट नही पहुँचाता है।

उद्देश्य

1. 11 वीं कक्षा के छात्र व छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का अध्ययन करना।
2. 11 वीं कक्षा के छात्र व छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
3. 11वीं कक्षा के छात्रों के पारिवारिक सम्बंधों का समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. 11वीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक सम्बंधों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. 11वीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. 11 वीं कक्षा के छात्र–छात्राओं के पारिवारिक सम्बंधों और समायोजन का अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं

1. 11वीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक सम्बंधों में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. 11 वीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नही है।

परिसीमन

1. केवल 200 छात्र–छात्राओं पर ही अध्ययन किया गया है।
2. केवल अलवर जिले के 04 स्कूलों के छात्र –छात्राओं पर अध्ययन किया गया है।
3. प्रस्तुत शोघ में 11 वीं कक्षा के केवल 100 छात्राओं एंव 100 छात्रों को सम्मिलित किया गया है।
4. प्रस्तुत शोध में केवल दो पहलुओं पारिवारिक वातावरण और शैक्षणिक उपलब्धि को चर के रूप में सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन को राजस्थान राज्य के अलवर जिले के 11 वीं कक्षा में पढ़ने वाले बालकों के तक सीमित रखा गया है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सवैक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

1. परिवारिक सम्बंध सूची By G.P Sherry & J.C. Singh
2. समायोजन सूची By A.K.P. Sinha & R.P. Singh

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में राजस्थान राज्य के अलवर जिले के 11 वीं कक्षा के 200 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में 100 छात्र एवं 100 छात्राए सम्मिलित है।

विश्लेषण और व्याख्या

11 वीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक सम्बंध के माध्य, प्रमाणिक विचलन अन्तर की सार्थकता का विश्लेषण एवं व्याख्या।

Z-Value

Areas	Mean (B)	Mean (G)	SD (B)	SD (G)	Z-Value	Level of Sinnificance
M.A	12.31	12.64	02.90	02.58		
F.A.	11.67	11.97	01.21	02.51		
M.C.	96.06	09.09	02.80	02.40	66.34	0.05
F.C.	09.94	09.81	02.50	02.13		
M.V.	14.43	14.50	03.36	03.09		
E.V.	11.62	12.61	03.11	02.56		

सारणी –01 में 11वीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक सम्बंध को जॉचना है। हम जो शून्य परिकल्पना लेकर चले थे कि छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक सम्बंध में कोई सार्थक अन्तर नही है। यह परिकल्पना स्वीकृत होती है। 100 छात्रों का माध्य तथा प्रमाणित विचलन है तथा 100 छात्राओं का प्रमाणिक विचलन है। तुलनात्मक दृष्टि से देखने पर इनमें कोई सार्थक अन्तर नही है।

11 वीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं का मध्यमान 10.41, 10.10 तथा प्रमाणिक विचलन 02.29, 02.51 है। छात्रों का मध्यभान छात्राओं से अधिक होने के कारण हम यह कह सकते है कि छात्र, छात्राओं की तुलना में संवेगात्मक रूप से अधिक स्थिरता रखते है इन दोनो समूहों का जेड– मूल्यों 0.74 है जो 0.05 के सार्थकता मान से कम आ रही है अर्थात जिसके आधार पर यह व्याख्या की जा सकती है कि हमारी शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है इससे पता चलता है कि लड़के व लड़कियों के संवेगात्मक समायोजन में अन्तर नही है।

सारणी–02

11 वीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के माध्य, प्रमाणिक विचलन, अन्तर की सार्थकता का विश्लेषण एवं व्याख्या।

Areas	M1 (B)	M2 (G)	(B)	(G)	Z-Value	Level of Significance
संवेगात्मक	10.41	10.10	02.29	02.51		
सामाजिक	10.69	10.03	02.54	02.26	0.74	0.05
शैक्षिक	09.98	10.34	02.59	02.23		

सारणी – 02 में 11वीं कक्षा में छात्र व छात्राओं के समायोजन का जॉचना है। इसमें हम जो शून्य परिकल्पना लेकर चले थे कि छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नही है। यह परिकल्पना स्वीकृत होती है। 100 छात्रों का माध्य तथा प्रमाणिक विचलन है। तथा 100 छात्राओं का माध्य तथा प्रमाणिक विचलन है। तुलनात्मक दृष्टि से इनमें कोई सार्थक अन्तर नही है।

11वीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं का माध्यभान 10.69, 10.03 तथा प्रमाणिक विचलन 02.54, 02.56 है। छात्राओं का माध्यभान छात्राओं से अधिक होने के कारण हम यह कह सकते है कि छात्र, छात्राओं की तुलना में सामाजिक समायोजन की अधिक स्थिरता रखते है। इन दोनों समूहों को जेड– मूल्य 0.74 है जो 0.05 के सार्थकता मान से कम आ रही है। अर्थात जिसके आधार पर यह व्याख्या क जा सकती है कि हमारी शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इससे पता चलता है कि छात्र व छात्राओं के सामाजिक समायोजन में अन्तर नही है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रत्येक शोधकार्य के द्वारा किसी कार्य की सफलता व असफलता की जानकारी प्राप्त होती है। तथा शिक्षा को भी नई दिशा प्रदान करने में सहायता मिलती है, क्योकि शैक्षणिक महत्व के बिना शोधकार्य अधूरा प्रतीत होता है। 11 वीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं का माध्यमान 10.69, 10.03 तथा प्रमाणित विचलन 2.54, 2.56 है। छात्रों का माध्यमान छात्राओं से अधिक होने के कारण हम यह कह सकते है कि छात्र, छात्राओं की तुलना में सामाजिक समायोजन की अधिक स्थिरता रखते है। इन दोनों समूहों को Z मूल्य 0.74 है जो 0.05 के सार्थकता मानसे कम आ रही है। अर्थात जिसके आधार पर यह व्याख्या की जा सकती है कि हमारी शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इससे पता चलता है कि छात्र व छात्राओं के सामाजिक समायोजन में अन्तर नही है।

शैक्षिक निहितार्थ

1. शोध अनुसंधान ज्ञान का भण्डार है, जो दूसरे शोधकार्य में मदद करने में सहायक होगा।
2. अध्यापकों को किशोरों के व्यवहार को जानने तथा पहचानने में मदद मिलेगी।
3. अध्यापकों को किशोरों की रूचि, आदतों तथा अभिवृति का पता चलेगा।
4. शोधकर्ताओं को आकड़ो का विश्लेषण करने, निष्कर्ष तथा सुझाव देने में मदद करता है।
5. शोध द्वारा प्राप्त ज्ञान को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति व एक स्थान से दूसरे स्थान तक ज्ञान को पहुचाने में मदद करता है।
6. शोधकार्य द्वारा अनेक सांख्यिकी विधियों तथा परिक्षणों की जानकारी प्राप्त होगी।
7. शोधकर्ताओं द्वारा चयनित समस्या के लिए किसी विधि तथा प्रक्रिया का चुनाव क रना आसान होगा।
8. शोधकर्ताओ को समस्या के परिमासीकरण, अवधारणाए सीमांकन तथा परिकल्पना के निर्माण में सहायता प्रदान करता है।
9. शोधकर्ताओं को आकडों का विश्लेषण करने, निष्कर्ष तथा सुझााव देने में मदद करता है।

आगामी शोध के लिए सुझाव

1. छात्र –छात्राओं की शिक्षा के प्रति समायोजन का अध्ययन उच्च स्तर पर किया जा सकता है।
2. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में समायोजन पर अध्ययन किया जा सकता है।

3. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के बालकों का समाज में सामाजिक, स्वीकृति पर एक अध्ययन किया जा सकता है।
4. सामान्य वर्ग, पिछड़ी जाति व अनुसूचित जाति के छात्र– छात्राओं का माध्यमिक स्तर पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
5. छात्र–छात्राओं का सहशिक्षा संस्थाओं, बेसिक स्कूलों, प्राईवेट संस्थानों में समस्याओं पर विभिन्न स्तरों पर अध्ययन किया जा सकता है।
6. वर्तमान अध्ययन में शोधकर्ता ने शोधकार्य को अलवर जिले तक ही सीमित किया है। यह भविष्य में राजस्थान राज्य के अन्रू जिलों व राज्य स्तर पर भी किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सक्सेना एन.आर. स्वरूप – शिक्षा के दार्शनिक व समाज शास्त्रीय सिद्वान्त।
2. Buch एम.बी. (1956) सैकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च –इन ऐजुकेशन, नवोदय सोसायटी फार एजुकेशन रिसर्च एण्ड डवलमैन्ट, बड़ौदा।
3. सिंह मोहन (1969) – महाविद्यालय छात्रों की समायोजन समस्याऐ, अप्रकाशित , एम.एड. शोध राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
4. अग्रवाल, एम.सी. (1970) –कॉलेज छात्रों का समायोजन, भारतीय मनोवैज्ञानिक।
5. मिश्रा महेन्द्र (1982) –अधिगम कामनों सामाजिक आधार एवं शिक्षण, नीलकंठ पुस्तक मन्दिर, जयपुर।
6. एडमस एच.ई. (1972) –समायोजन का मनोविज्ञान न्यूयार्क रीगतड्म, पाण्डेय रामशुक्ल।
7. नाथ पारस (1973) –अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा।
8. वालिया जे.एस. (2007) नुदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा।
9. पाढक एवं त्यागी (2003) –शिक्षा के दार्शनिक सिद्वान्त विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
10. सिंह जगवीर (2006) बाल्यावस्था और बाल विकास हितेषी पढिलशर्स प्रा.लि. दरियागंज, नई दिल्ली।
11. Buch एम.बी. (1956) ए सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेशन सेन्टर आफ एडवान्स स्टडीज आफॅ एजुकेशन एण्ड साईकोलांजी, यूनिवर्सिटी आफ बदौदा
12. स्वामी नारियर (1973) महाविद्यालय, छात्रों का समायोजन समस्या अप्रकाशित एम.एड. शोध, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर
13. सरसेना स्वाति (1974) शिक्षा का सिद्वान्त

*** Corresponding Author**

राजेश कुमार, *शोधार्थी*

ग्राम–भीटेड़ा, पोस्ट–रिवाली, तहसील–बहरोड़

जिला–अलवर, राजस्थान

E-Mail- rajeshkm728@gmail.com, Mob- 9785606479